परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण मेवाड़ में

कूंठवा का कण-कण पुलकित

१३ अप्रेल। आज प्रातः कोठारी फार्म हाउस में परिभ्रमण के पश्चात् परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ७.५ किमी. का विहार कर कूंठवा पधारे। महातपस्वी के स्वागत में कूंठवा का कण-कण श्रद्धा और हर्ष से आप्लावित था। गांव के सरपंच प्रतापसिंहजी आदि गणमान्य लोगों ने पूज्यवर की अगवानी की। ठाकुर लक्ष्मणसिंहजी के विनम्र अनुरोध पर आचार्यवर रावले में पधारे। प्रायः सभी तेरापंथी घरों और तेरापंथ भवन में चरण स्पर्श से तृप्त श्रावकों का उत्साह दर्शनीय था। मकानों की ऊंची सीढ़ियां पूज्य चरणों को रोकने में असमर्थ सिद्ध हो रही थीं। श्रम-स्वेद से अभिस्नात आचार्यवर भक्तों पर कृपा की वर्षा कर रहे थे। प्रायः सुनसान रहने वाली गलियां आज जनाकीर्ण बनी हुई थीं। श्री अर्जुनजी सोलंकी के आवास पर आचार्यवर ने अल्पकालिक प्रवास किया। अर्जुनजी उपासक के रूप में संघ को अपनी सेवाएं दे रहे हैं। उनकी मां श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. श्रीमती लक्ष्मीदेवी संघ और संघपति के प्रति समर्पित श्राविका थीं। गुरु को अपने गृह-प्रांगण में पाकर सोलंकी परिवार हर्ष विभोर था। मुनि जंबूकुमारजी (सर.) ने आज अपने सहवर्ती मुनि स्वस्तिककुमारजी के साथ गुरु दर्शन किए।

प्रातःकालीन प्रवचन में पूज्य आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी एवं महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के वक्तव्य हुए। उदयपुर में दिवंगत साध्वी कानकुमारीजी (सर.) की सहवर्तिनी साध्वी कुन्दनप्रभाजी आदि साध्वियों ने गुरुदर्शन कर अपने आन्तरिक उल्लास को गीत के माध्यम से अभिव्यक्ति दी। साध्वी विद्युत्प्रभाजी ने साध्वी कानकुमारीजी के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। मालवा में तीन चातुर्मास संपन्न कर श्रीचरणों में पहुंची साध्वी गुणमालाजी ने अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी का भी इस अवसर पर प्रेरक अभिभाषण हुआ।

पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'व्यक्ति प्रवृत्ति बहुल होता है। उपशान्त मोह की अवस्था में सद्वृत्तियां जागृत होती हैं। इसके विपरीत मोह की उदयावस्था में दुष्प्रवृत्तियां जागृत होती हैं। मोह कर्म को प्रतनु करना ही साधु की मुख्य साधना होती है। उदय और क्षयोपशम के संघर्ष का नाम ही साधना है। जहां साधना का विकास है, वहां शान्ति है।'

उपस्थित श्रोताओं को एक संस्मरण सुनाते हुए आचार्यवर ने कहा 'आज जब मैं घरों में घूम रहा था, तब एक घर के बाहर चीटियों को देखकर मैं बाहर ही रुक गया, किन्तु हमारे बालमुनि मृदुकुमारजी द्रुत गति से भीतर चले गए। मैंने उनसे कहा 'जब भीतर चले ही गए हो तो तुम्हीं गोचरी कर लो।' थोड़ी देर बाद जब वे मेरे पास आए तो मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि गोचरी नहीं की। मैंने पूछा 'क्यों?' वे बोले 'वह भाई भी इधर से ही भीतर आया था। उसके पैरों के नीचे आकर चीटियां मर गई होंगी, वह असूझता हो गया, इसलिए मैंने गोचरी नहीं की। उनके उत्तर को सुनकर मुझे प्रसन्नता हुई और मैंने सोचा कि संघ में एक बालमुनि के पास भी आचार के प्रति इतनी सूक्ष्म दृष्टि है तो लगता है तेरापंथ का भविष्य उज्ज्वल है।'

कूंठवा के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा 'मैं कूंठवा पहली बार आया हूं। लगभग अठाईस वर्ष पूर्व गुरुदेव तुलसी यहां पधारे थे। हमारे एक दिन के प्रवास में भी मुम्बई, सूरत, अहमदाबाद आदि क्षेत्रों में प्रवास करने वाले श्रद्धालु श्रद्धा और दायित्व निर्वाह की भावना के साथ अपने गांव पहुंच जाते हैं। कूंठवा आने पर मुझे श्राविका लक्ष्मीबाई सोलंकी की स्मृति हो आई। वह एक श्रद्धाशील और दाठीक महिला थी। कूंठवा आने के लिए बार-बार निवेदन करती थी। वह श्राविका लाडनूं में उपासना करते हुए दिवंगत हुई। कूंठवा के लोगों में धर्म की चेतना बनी रहे। जहां भी रहें धर्म, धर्मसंघ और आत्मा को विस्मृत न करें।'

आज दर्शन करने वाली साध्वियों के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा 'साध्वी कानकुमारीजी की सहवर्तिनी साध्वियां आज यहां पहुंची हैं। साध्वी कानकुमारीजी बहुत अच्छी साध्वी थीं। उन्होंने अनेक रूपों में संघ की सेवा की। साध्वी गुणमालाजी तीन वर्ष मालवा रहकर आई हैं। मेवाड़ उनकी जन्मभूमि है। हमारी साध्वियां जहां भी जाती हैं, यथाशक्ति अच्छा कार्य करने का प्रयास करती हैं। कल पांच सिंघाड़े और आज तीन सिंघाड़े मिले हैं। इन दिनों मिनी महोत्सव जैसा हो रहा है।'

प्रवचन के पश्चात् आचार्यप्रवर श्री डालचन्दजी बाफना के आवास पर पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

शिशोदा में पावन शुभागमन

१४ अप्रेल। आज प्रातः तीन किमी. का विहार कर आचार्यवर ने चारदिवसीय प्रवास हेतु शिशोदा में प्रवेश किया। गांव के बाहर स्थित स्व. हमेरलाल धाकड़ आरोग्य सेवा प्रकल्प एवं आचार्य महाप्रज्ञ आरोग्य केन्द्र में पधारे। यहां चल रही प्रवृत्तियों के संदर्भ में केन्द्र के संचालक श्री रमेशजी धाकड़ ने विस्तार से जानकारी दी। आरोग्य सेवा केन्द्र में लगभग एक घंटे के प्रवास के बाद आचार्यवर ने गांव में प्रवेश किया। मेवाड़ी पगड़ियों में शिशोदावासी जयकारों के साथ अपने उत्साह को प्रकट कर रहे थे। मार्ग के दोनों ओर खड़े हजारों लोग भक्ति भाव के साथ आचार्यप्रवर का श्रद्धासिक्त वंदन कर रहे थे। आचार्यवर जुलूस के बीच शिशोदा के प्रसिद्ध क्षेत्रपाल मंदिर में भी पधारे। भव्य पंडाल में पहुंचकर विशाल जुलूस स्वागत सभा के रूप में परिणत हो गया।

स्वागत कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल एवं युवक परिषद के सदस्यों के मंगल संगान से हुआ। प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री रमेशकुमारजी धाकड़, स्वागताध्यक्ष श्री अरविन्द धाकड़, स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री फतेहलाल धाकड़ ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। श्री सोहनलालजी धाकड़ ने संकल्प पत्र भेंट किए। मुनि जम्बूकुमारजी सरदारशहर और उनके सहयोगी मुनि स्वस्तिक कुमारजी ने गुरु-दर्शन से प्राप्त प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी।

राजसमन्द की विधायक श्रीमती किरण माहेश्वरी ने कहा 'मेवाड़ की भक्तिमान जनता संतों की सेवा हेतु सदैव तत्पर रहती है। सबसे बड़ा सुयोग मेवाड़ को यह मिला है कि यहां के ग्रामीण क्षेत्र केलवा में पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण का चातुर्मास है। इस चातुर्मास से सबको लाभान्वित होना है और इसे ऐतिहासिक बनाने के लिए हम संकल्पबद्ध हैं।'

नाथद्वारा के विधायक श्री कल्याणसिंह चौहान ने कहा 'धर्म के प्रति आस्थावान किसी भी व्यक्ति के लिए पहली जरूरत है उसकी कथनी और करनी में समानता। हम पुण्य का काम तो बताकर करते हैं और पाप कर्म छिपा कर करते हैं। इस तरह का व्यवहार हमारे जीवन में अनेक प्रकार की विकृतियों को जन्म देता है। हम आचार्यश्री महाश्रमण जैसे महापुरुषों के प्रवचन को सुनें और उसके अनुसार अपने जीवन को ढालें।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा 'आचार्यप्रवर के प्रवचन का उद्‌देश्य लोगों को ज्ञान देना है, उन्हें उद्‌बुद्ध करना है। प्रवचन श्रवण और उसे हृदयंगम करने से विवेक चेतना और उपशम की चेतना का जागरण होता है। इससे दृष्टिकोण सम्यक् बनता है। आचार्यवर की मेवाड़ यात्रा पूरे उत्साह के साथ गतिमान है। यह यात्रा आने वाले समय में क्रान्ति के नए अभिलेख लिखेगी, ऐसा विश्वास है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'व्यक्ति को अहंकार से बचने का प्रयास करना चाहिए। अहंकार से क्रोध उत्पन्न होता है, जो कई तरह की समस्याओं का कारण बनता है। अहंकार की स्थिति में दूसरों को अपने अधीन बनाने की भावना पैदा होती है। अभिमान मदिरा पान के समान है, जो व्यक्ति को उन्मत्त बना देता है। विनम्रता से अहंकार को जीतने का प्रयास करें।'

शिशोदा आगमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा 'शिशोदा आने के लिए हमें काफी दूरी तय करनी पड़ी है। मुझे सात्विक प्रसन्नता है कि पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ की घोषणा को पूरा करने के लिए आज हम सिसोदा पहुंच गये। यहां मुख्यतः धाकड़ परिवार ही हैं। लोग चाहे कहीं भी रहें, उनमें श्रद्धा-भक्ति है। यहां आने पर हमेरलालजी की स्मृति सहज ही हो आई। उनके सुपुत्र रमेशजी भक्तिमान और शान्तमना श्रावक हैं, अच्छे कार्यकर्ता हैं। हमेरलालजी अब नहीं रहे, किन्तु व्यक्ति विशेष कार्य करता है तो जाने के बाद भी लोग उसे याद करते हैं।' आचार्यवर ने आगे कहा 'मुनि जंबूकुमारजी अच्छे तत्वज्ञानी युवा संत हैं। इनके सहवर्ती मुनि स्वस्तिककुमारजी वैराग्य रखने वाले संत हैं। खूब अच्छा कार्य करते रहें।

समागत अतिथियों को साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। रात्रि में आयोजित स्वागत के अवशिष्ट कार्यक्रम में मुम्बई के उरण, डोंबीवली, साकीनाका, बोरीवली, मलाड, कांदीवली आदि उपनगरों में चल रही ज्ञानशालाओं के ज्ञानार्थी बच्चों ने सरस प्रस्तुति दी। गीत और वक्तव्य के द्वारा लोगों ने अपने भावों को अभिव्यक्ति दी।

१५ अप्रेल। आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में साध्वी चारित्रयशाजी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने प्रेरक प्रवचन में कहा 'प्रत्येक व्यक्ति माया से बचे। माया से मित्रता विनष्ट हो जाती है। माया और मित्र दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते। इसके लिए संस्कार अच्छे होने चाहिए। संस्कार और संस्कृति इन दोनों की रक्षा बहुत जरूरी है। इनकी सुरक्षा के लिए अपेक्षित है व्यक्ति, परिवार सहित समाज का वातावरण अच्छा रहे।'

पारिवारिक सौहार्द के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा 'परिवार का वातावरण स्वस्थ होना चाहिए। पारिवारिक जीवन

को शान्तिमय बनाना है तो छोटी-छोटी बातों को लेकर तनावग्रस्त होने से बचें। तनाव हो जाए तो उसे मिटाने का प्रयास करें।'

समारोह में बड़ी संख्या में उपस्थित स्थानीय और आसपास के क्षेत्रों से समागत किसानों की ओर अभिमुख होते हुए आचार्यवर ने कहा 'किसान अन्नदाता है। वह अपने श्रम से अन्न का उत्पादन करता है, उसके श्रम से ही अनाज सब तक पहुंचता है। किसानों का जीवन नशामुक्त रहे। उसमें किसी भी प्रकार का व्यसन न हो।'

मध्याह्न में राजसमन्द जिले के कलक्टर डॉ. प्रीतम बी. यशवंत एवं एस.पी. डॉ. नितिनदीप बलगन ने आचार्यवर के दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

आचार्यवर के विशेष निर्देश से मध्याह्न में विभिन्न प्रशिक्षण कक्षाएं चलीं। मुनि उदितकुमारजी ने युवकों को और मुनि विजयकुमारजी एवं मुनि प्रशमकुमारजी ने बच्चों को प्रशिक्षण दिया। कन्याओं और महिलाओं को महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की सन्निधि में प्रशिक्षण दिया गया। रात्रि में प्रवचन के पश्चात स्थानीय परिवारों को पूज्यप्रवर की निकट उपासना का अवसर मिला। आचार्यवर ने सबको जप, सामायिक आदि की प्रेरणा दी और प्रायः परिवारों का व्यक्तिशः परिचय लिया।

आज प्रातः परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के मुखकमल व मस्तक का लुंचन हुआ। साध्वीप्रमुखाजी, मंत्री मुनिजी सहित संतों और साध्वियों के निर्जरा में सहयोगी बनने की प्रार्थना पर आचार्यवर ने आधा घंटा आगम स्वाध्याय की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में उपस्थित श्रावकों की प्रार्थना पर पूज्यवर ने उन्हें सात सामायिक करने का संकल्प करवाया।

१६ अप्रेल। प्रातः सूर्योदय के कुछ क्षणों के बाद आचार्यवर भक्तों के घर पगल्या करने हेतु पधारे। छोटी-छोटी गलियों में पहाड़ी उतार-चढ़ावों को पार करते और घरों की ऊंची-नीची सीढ़ियां चढ़ते-उतरते सत्तर से अधिक घरों में पधारे। श्रद्धालु श्रावकों की प्रसनता का कोई पार नहीं था।

२६१०वीं महावीर जयंती का भव्य आयोजन

जन-जन के आराध्य, जैन परंपरा के अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म कल्याणक महोत्सव। तीन वर्ष पूर्व १८ अप्रेल २००८ को शिशोदा में आयोज्य महावीर जयंती समारोह आचार्यश्री महाप्रज्ञ के अस्वास्थ्य की स्थिति में स्थगित हो गया था। तीन वर्ष बाद उनके उत्तराधिकारी आचार्यश्री महाश्रमण की अनुकंपा से शिशोदावासियों को वह अवसर उपलब्ध हुआ।

कार्यक्रम का प्रारंभ आचार्यवर के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ। स्थानीय महिला मंडल और तेयुप के सदस्यों ने मंगल गीत का संगान किया। प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री रमेशकुमारजी धाकड़, स्वागताध्यक्ष श्री अरविन्द धाकड़ ने आगंतुकों का स्वागत किया। श्री प्रकाश धाकड़ ने मुक्तकों के माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति दी।

चित्तौड़गढ़ की सांसद एवं राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष डॉ. गिरिजा व्यास ने अपने वक्तव्य में कहा 'देश में महापुरुषों की प्रासंगिकता विद्यमान है। 'प्रकृति से छेड़छाड़ मत करो' भगवान महावीर का सिद्धान्त बहुत महत्त्वपूर्ण है, सार्वकालिक है। आज कुछ लोगों ने प्रकृति को मुट्ठी में लेने की कोशिश की है, जिसका परिणाम यह है कि प्रकृति भी विद्रोह पर उतर आई है। आचार्य बनने के बाद मैं पहली बार आज मेवाड़ में आचार्यश्री महाश्रमण के दर्शन कर रही हूं। आपकी अहिंसा यात्रा बहुत उपयोगी है तथा आपकी वाणी में युगीन समस्याओं का समाधान है।'

केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्री डॉ. सी.पी. जोशी ने कहा 'भगवान महावीर के सिद्धान्त वैसे तो त्रैकालिक हैं, किन्तु आज के समय में वे सर्वाधिक उपयोगी हैं। उन्हें आत्मसात् करने की जरूरत है, तभी जीवन सार्थक बनेगा। आचार्यश्री के मेवाड़ पदार्पण से यहां नैतिकता और धर्म-अध्यात्म की सरिता प्रवाहित हो रही है। अपेक्षा है हम आपकी शिक्षाओं के अनुरूप स्वयं के जीवन को ढालें।' उदयपुर के सांसद श्री रघुवीर मीणा ने अपने वक्तव्य में संत समाज को पथदर्शक बताते हुए महावीर के उपदेशों को अपने जीवन में उतारने का आह्वान किया।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने कहा 'भगवान महावीर करुणा और संवेदनशीलता के अजस्र स्रोत थे। उनके अहिंसा-दर्शन में सब तरह की समस्याओं का समाधान है। अपेक्षा है हम उनके दर्शन को समझें और उसे अपने जीवन में चरितार्थ करने का प्रयास करें।'

मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी ने कहा 'भगवान महावीर कालजयी व्यक्तित्व थे। वे अपने आपमें एक संस्कृति थे, दर्शन थे। उन्होंने जो दर्शन दिया, वह अनुपम है। उन्होंने समाज और देश में व्याप्त विसंगतियों को निर्मूल किया। इसी कारण वे जन-जन के आराध्य बने।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा 'दुनिया में एकमात्र भारतवर्ष ही ऐसा देश है, जहां सर्वाधिक महापुरुषों ने जन्म लिया और वे संपूर्ण विश्व में विख्यात हुए। वे महापुरुष हमारी आध्यात्मिक

और सांस्कृतिक परंपराओं के रक्षाकवच बने हुए हैं। ऐसे विशिष्ट महापुरुषों में भगवान महावीर का जीवन और दर्शन समस्त मानव जाति के लिए बहुत बड़ा आश्वासन है, प्रेरणा है, भरोसा है। महापथ पर चलने वाला वीर और महापथ का निर्माण करने वाला महावीर होता है। भगवान महावीर ने दार्शनिक पृष्ठभूमि पर अहिंसा और अपरिग्रह का सिद्धान्त दिया तो व्यावहारिक पृष्ठभूमि पर समता, सहिष्णुता और मैत्री की बात कही।' महाश्रमणीजी ने भगवान महावीर को मैनेजमेंट का महागुरु बताते हुए उनके कई सूत्रों की विशद व्याख्या की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'भारत भूमि पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया। उन्होंने तप तपा, साधना की और सत्य का साक्षात्कार किया। उन्होंने जो जाना और जो प्राप्त किया, उससे जनता का पथदर्शन किया। उन महापुरुषों में उत्तम श्रेणी के महापुरुष हैं भगवान महावीर। उन्होंने अहिंसा, समता और संयम का उदाहरण ही प्रस्तुत नहीं किया, उसे अपने जीवन में जीवंत कर दिखाया। उनमें अनुकंपा की विशिष्ट चेतना थी।'

विकास के चार आयामों की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा 'आर्थिक और भौतिक दृष्टिकोण जब हावी हो जाता है तो भ्रष्टाचार पनपने लगता है। इसे मिटाने के लिए गुरुदेवश्री तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से जीवन में नैतिकता और संयम को अपनाने की बात कही। उपभोग-संयम से स्वस्थ समाज की रचना हो सकती है। स्वस्थ समाज की रचना की दृष्टि से जीवन में व्रत की चेतना का जागरण आवश्यक है। अणुव्रत स्वस्थ और संतुलित जीवन की आचार-संहिता है। आज बहुत आवश्यक है कि श्रावक के बारह व्रतों का व्यापक प्रचार-प्रसार हो। इससे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का आध्यात्मिक विकास तो होगा ही, सामाजिक और सांस्कृतिक उन्नयन भी होगा।'

जैन एकता और समन्वय की दृष्टि से महावीर जयंती को उपयुक्त अवसर बताते हुए आचार्यवर ने कहा 'भगवान महावीर के सर्वजन हिताय उपदेशों को एक मंच से प्रस्तुति देने से उसका व्यापक प्रभाव पड़ेगा। आयारो सूत्र में वर्णित भगवान महावीर के जीवन और दर्शन से प्रेरणा मिलती है। उनका जीवन साधना से ओतप्रोत था। अपेक्षा है उनके दर्शन को जीवन में उतारें।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। पूज्यवर का आजका रात्रिकालीन प्रवास श्री सोहनलालजी धाकड़ के आवास पर हुआ।

महावीर जयंती : उल्लेखनीय तथ्य

- महावीर जयंती समारोह में केन्द्रीय मंत्री डॉ. सी.पी. जोशी, महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष व सांसद डॉ. गिरिजा व्यास, सांसद रघुवीर मीणा, राजस्थान गुर्जर महासभा के अध्यक्ष देवकीनंदन 'काका', नाथद्वारा नगरपालिका की चेयरपर्सन श्रीमती गीता शर्मा, उदयपुर शहर कांग्रेस अध्यक्ष श्री अजयसिंह, ग्रामीण बैंक के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र वैष्णव, सिसोदा के सरपंच श्री रूपलाल भील, जिला प्रमुख श्री किशनलाल गमेती, ठाकुर उग्रसिंहजी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री प्रदीपमोहन शर्मा, एस.डी.एम. निमिषा गुप्ता आदि उपस्थित थे।
- प्रवास व्यवस्था समिति के सूत्रों के अनुसार भव्य व विशाल पंडाल ६६ हजार वर्गफीट था। उपस्थिति लगभग बारह हजार आंकी गई। बीस-बीस हजार वर्गफीट के दो अलग पंडाल भी निर्मित थे, जिनमें भोजनालय की वयवस्था की गई थी। इस व्यवस्था के प्रभारी ने बताया इस अवसर पर मेवाड़ी संस्कृति के अनुरूप आगंतुकों को एक टन दही की छाछ पिलाई गई।
- परिवहन व्यवस्था के सूत्रों के अनुसार महावीर जयंती पर विभिन्न क्षेत्रों से लगभग ५३ बसों, २५० कारों, मोटरसाइकिल और दूसरे अन्य साधनों से लोग सिसोदा पहुंचे। परिवहन व्यवस्था को चाकचौबंद रखने हेतु तीन पार्किंग जोन बनाए गए थे।
- कार्यक्रम में स्थानीय व बाहर से समागत तेरापंथी जैन लोगों के अतिरिक्त छत्तीस कौमों के लोग सम्मिलित हुए। आसपास की बाहर भागलों ढाणी के लोग भी गुरुदर्शन हेतु उमड़ पड़े।
- आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउण्डेशन मुम्बई के अध्यक्ष श्री सोहनलालजी धाकड़ ने घोषणा की सोहनलाल वरदीचन्द मेघराज अजित धाकड़ की ओर से तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम को चिकित्सा संबंधी उपकरणों से लैस एक मोबाइल वैन भेंट की जाएगी। इसी तरह एक वैन टी.पी. एफ. कैम्प हेतु रोशनलाल, अनिल, भूपेन्द्र, आशिक, यश, जश धाकड़ द्वारा दिए जाने की घोषणा की गई।
- मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी द्वारा आलेखित एवं महासभा द्वारा प्रकाशित ग्रंथ 'तेरापंथ दिग्दर्शन २००८-२००९' महासभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री ख्यालीलालजी तातेड़, ट्रस्टी श्री भंवरलाल कर्णावट एवं रमेशकुमार धाकड़ ने पूज्यवर को भेंट किया। आचार्यवर ने इस संदर्भ में कहा 'तेरापंथ दिग्दर्शन प्रतिवर्ष प्रकाशित होता है। इस पुस्तक के माध्यम से लेखा-जोखा देखा जा सकता है। इस पुस्तक को तैयार करने में मंत्री मुनिश्री व उदित मुनि का योगदान रहा है। इतिहास पढ़ने की अभिरुचि रखने वालों व शोधार्थियों के लिए यह पुस्तक उपयोगी है।'

- साध्वी जिनप्रभाजी ने 'व्रत दीक्षा' पुस्तक उपहृत की। आचार्यवर ने कहा 'श्रावक के बारह व्रत धारण करने वालों के लिए यह पुस्तक उपयोगी है। साध्वी जिनप्रभाजी ने इसमें श्रम किया है। इस पुस्तक के माध्यम से व्रतों को स्वीकार करने में सुविधा रहेगी।'
- शिशोदा प्रवास में श्री इन्द्रमल, संजय, नितेश धाकड़, शिशोदा-मुम्बई के सौजन्य से साहित्य अर्द्धमूल्य पर उपलब्ध रहा। साहित्यप्रेमियों ने इस छूट का पूरा लाभ उठाया।
- शिशोदा गांव की ओर से डॉ. सी.पी. जोशी, डॉ. गिरिजा व्यास, श्री रमेशजी धाकड़ आदि गणमान्य लोगों ने परम पूज्य आचार्यवर को अभिनंदन पत्र समर्पित किया। समागत अतिथियों को साहित्य एवं स्मृतिचिह्न से सम्मानित किया गया।
- शिशोदा तेरापंथ का इकरंगा क्षेत्र है। पहली बार कोई विशिष्ट कार्यक्रम आचार्यों की सन्निधि में यहां संपन्न हुआ। सामान्यतया बीस-पचीस घर विशिष्ट अवसरों पर यहां खुलते हैं। इस बार शिशोदा में कुल १३८ घर खुले। इन सभी परिवारों के गृह-प्रांगण को दो दिन में पूज्य आचार्यवर ने अपनी चरणरज से पावन किया। आचार्यवर को अपने घर-आंगन में पाकर परिवारों की प्रसन्नता का कोई पार न था। प्रायः शिशोदावासी मुम्बई में प्रवासित हैं। सबमें अच्छा उत्साह है।
- प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री रमेशकुमार धाकड़ के नेतृत्व में कार्यकर्ता पूर्ण सक्रिय रहे। आगंतुकों ने यहां के व्यवस्था पक्ष एवं आतिथ्य सत्कार की सराहना की।

१७ अप्रेल। आज प्रातः परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने शिशोदा के लगभग अस्सी घरों को स्पर्श किया। प्रातःकालीन कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह को पावन संबोध प्रदान करते हुए परमाराध्य आचार्यवर ने कहा 'लोभ एक ऐसा तत्त्व है, जो सब कुछ नष्ट कर देता है। चित्त नैर्मल्य की न्यूनता का एक कारण है लोभ। इन्द्रिय चेतना के साथ लोभ जुड़ा हुआ है। जो अपनी इन्द्रियों की लगान को खींच कर रखता है, वह परम सारथी होता है। इन्द्रिय विषयों में राग-द्वेष को न जोड़ना ही साधना है। मोहग्रस्त व्यक्ति असंतोष को प्राप्त होता है, इसलिए लोभ की वृत्ति को छोड़कर संतोष की चेतना को जागृत करने का प्रयास करना चाहिए। लोभ के समाप्त होने पर अनेक दुष्प्रवृत्तियां अपने आप समाप्त हो जाती हैं।'

पूज्य आचार्यप्रवर ने मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी के ८०वें जन्मदिवस के संदर्भ में कहा 'मुझे बताया गया कि श्रद्धेय मंत्री मुनि का आज ८०वां जन्मदिवस है। मुनिश्री ने संघ की बहुत सेवा की है, साधना की है। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहे और लंबे काल तक शासन की खूब सेवा करते रहें।'

शिशोदा के चारदिवसीय प्रवास के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा 'शिशोदा में महावीर जयंती का मुख्य कार्यक्रम संपन्न हो गया। यहां जनता की इतनी बड़ी उपस्थिति देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। इस प्रवास में अद्भुत उत्साह और अद्भुत उपस्थिति रही। मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि इतने प्रवासी आ जाएंगे। प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक रमेश धाकड़ आचार्यश्री महाप्रज्ञ के समय से ही समाजसेवा और संघसेवा के कार्य से जुड़े हुए हैं। ये खूब अच्छा काम करते रहें, शासन की सेवा करते रहें। शिशोदा की जनता में अध्यात्म चेतना और आत्मचेतना विकसित होती रहे। सबमें धार्मिक उत्साह बना रहे।' आचार्यवर ने आगे कहा 'शिशोदा में न केवल श्रावक समाज, अपितु साधु-साध्वियों की उपस्थिति भी बढ़ी है। अनेक सिंघाड़े शिशोदा, कूंठवा आदि क्षेत्रों में पहुंच गए। तीन सिंघाड़े सुदूर दक्षिण से यात्रा करके आए हैं। साध्वियों का इस प्रकार दूर-दूर तक जाना, यात्रा करना, जनता के बीच में काम करना महत्त्वपूर्ण बात है। साधना का बल जागता है अथवा संघीय शक्ति काम करती है, तभी यह संभव हो पाता है।'

तेरापंथ मानव हितकारी संघ राणावास द्वारा संचालित बी.एड्. कालेज की ८५ छात्राएं पूज्य चरणों में उपस्थित हुईं। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री तेजराजजी पुनमिया ने संस्थान की गतिविधियों की अवगति दी। पूज्य आचार्यवर ने छात्राओं को प्रेरणा-पाथेय प्रदान किया।

गुरु चरणों में पहुंची अहमदाबाद तेयुप

तेयुप अहमदाबाद के ४४२ सदस्यों की युवा विकास यात्रा १७ अप्रेल को गुरु चरणों में पहुंची। यात्रा विशेष सार्थक बने, इस उद्देश्य से पूरे दिन युवा चेतना कार्यशाला के रूप में कार्यक्रम नियोजित किया गया। युवकों ने एक सुव्यवस्थित नशामुक्ति रैली निकाली, जिसमें नशामुक्ति के नारों से संदेश प्रसारित किया गया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में पूज्य आचार्यवर ने कहा 'अहमदाबाद से चार सौ से ज्यादा युवक आए हैं। सबमें भावना है, उल्लास है और कार्य करने की ललक है। नशामुक्ति एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। युवक इस दिशा में अपनी शक्ति का उपयोग करें।'

कार्यक्रम के बाद तेरापंथ भवन में आयोजित औपचारिक उद्घाटन सत्र में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गौतम डागा,

महामंत्री श्री रमेश सुतरिया, अहमदाबाद सभा के अध्यक्ष श्री मदनजी कोठारी, राजीव छाजेड़ आदि ने अपने विचार रखे। मुनि उदितकुमारजी ने युवकों को विकास के संदर्भ में जागरूक रहने की बात कही। मध्याह्न में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने प्रेरक संबोधन में युवकों की कर्तव्य चेतना को रेखांकित किया। साध्वी जिनप्रभाजी ने युवकों को विषयबद्ध प्रशिक्षण दिया। मुनि कुमारश्रमणजी ने अमृत महोत्सव की अवगति देते हुए १२ मई को आयोज्य प्रथम चरण में गुरु चरणों में अपनी भावांजलि अर्पित करने का आह्वान किया। अहमदाबाद तेयुप के अध्यक्ष श्री मुकेश गुगलिया, मंत्री अनिल कोठारी, यात्रा संयोजक आदि का नेतृत्व कौशल मुखर रहा। कार्यशाला में तेयुप प्रभारी मुनि दिनेशकुमारजी, सहप्रभारी मुनि योगेशकुमारजी का मार्गदर्शन कार्यकारी रहा।

कोशीवाड़ा में भावभीना स्वागत

१८ अप्रेल। चारदिवसीय शिशोदा प्रवास के बाद आज प्रातः पूज्य आचार्यवर ने कोशीवाड़ा के लिए विहार किया। लगभग दस किमी. की यात्रा में असली मेवाड़ के दर्शन हुए। मार्ग में सर्पाकार घूमती नदी, उसमें कल-कल बहता जल, एनीकट घाटियां और उसमें बिछी हरीतिमा मन को आकृष्ट व प्रफुल्लित कर रही थी। दूसरी ओर तीखे उतार-चढ़ाव और विकट मोड़ हर क्षण यात्रियों को सजग रहने का संदेश दे रहे थे। मध्यवर्ती ब्राह्मणबहुल दड़वल गांव के सैकड़ों लोगों ने पूज्यवर का स्वागत किया। आचार्यवर ने गांववासियों को संक्षिप्त संबोध प्रदान किया। लगभग साढ़े दस किमी. का विहार कर पूज्यप्रवर ने विशाल जुलूस के साथ कोशीवाड़ा में प्रवेश किया। यहां आपका प्रवास तेरापंथ भवन में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में खमनोर पंचायत प्रधान श्री पुरुषोत्तम माली, जिला प्रमुख श्री किशनलाल गमेती, मेवाड़ कान्फ्रेंस के अध्यक्ष डॉ. बसंतीलाल बाबेल, प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री किशनलाल डागलिया ने पूज्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। भ्रातृद्वय नचिकेता मुनि अनुशासनकुमारजी एवं मृदुकुमारजी ने अपनी मातृभूमि की ओर से भावपूर्ण शब्दों में आचार्यवर का स्वागत किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा 'कोशीवाड़ा के दो छोटे-छोटे बालकों का एक साथ दीक्षित होना गांव वालों के लिए गर्व की बात है। आचार्यवर के आगमन को लेकर गांव के लोगों में बहुत उत्साह है।'

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में क्रोध निवारण हेतु पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा निर्दिष्ट सूत्रों एवं प्रयोगों की चर्चा की। आचार्यवर ने कहा 'कोशीवाड़ा छोटा-सा गांव है। यहां के अनेक परिवार मुम्बई में प्रवासित हैं। डागलिया और राठौड़ यहां के मुख्य परिवार हैं। यहां के अनेक कार्यकर्ता अपनी सेवाएं दे रहे हैं।' कोशीवाड़ा के दोनों बालमुनियों के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा 'हमारे साथ कोशीवाड़ा के दो बाल मुनि मुनि अनुशासनकुमारजी और मुनि मृदुकुमारजी आए हैं। दोनों भाई छोटी अवस्था में साधु बने हैं। मुनि अनुशासनकुमारजी वैरागी अवस्था में मेरे पास अध्ययन किया करते थे। ये अच्छी सेवा करने वाले संत हैं। अपने स्वास्थ्य को अच्छा रखें। मुनि मृदुकुमार नौ वर्ष में दो दिन कम थे, तभी साधु बन गए। खूब अच्छी सेवा करने वाले संत हैं। मैंने इनके लिए एक श्लोक लिखा था 'भूयाद् बिद्वच्छिरोमणि' तुम्हें विद्वत् शिरोमणि बनना है। परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने इस श्लोक को देखकर कहा 'तुम्हें महाश्रमण का आशीर्वाद मिला है। इसमें प्रतिभा है। उसका अच्छा उपयोग कर इसे चरितार्थ करना है।' दोनों संत खूब अच्छा विकास करें।

गुरु को प्रदत्त शिष्य भिक्षा को बड़ा दान बताते हुए आचार्यवर ने कहा 'इनके माता-पिता को साधुवाद देना चाहिए। इन्होंने अपने दोनों पुत्रों को भावनापूर्वक संघ को समर्पित कर बड़ी हिम्मत का कार्य किया है।'

जन प्रतिनिधि सम्मेलन का अपूर्व आयोजन

परम श्रद्धेय आचार्यवर की पावन सन्निधि में कोशीवाड़ा में अपूर्व और ऐतिहासिक जन प्रतिनिधि सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें राजसमन्द जिला परिषद के २५ सदस्यों में से पन्द्रह सदस्यों ने भाग लिया। जिले की सात पंचायत समितियों खमनोर, आमेट, कुंभलगढ़, भीम, राजसमन्द, रेलमगरा और देवगढ़ के २०४ सदस्यों में से १९१ सदस्यों ने भाग लिया। इस प्रकार का जिला स्तरीय सम्मेलन संभवतः पहली बार आयोजित हुआ।

मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी के प्रेरक वक्तव्य के पश्चात महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा 'अहिंसा यात्रा के दौरान आचार्यवर समसामयिक समस्याओं पर ध्यान दे रहे हैं। यहां उपस्थित जनप्रतिनिधि अहिंसा यात्रा को ऐतिहासिक बनाने के लिए अपने-अपने क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दें। सबको शिक्षा, चिकित्सा और न्याय सुलभ हो तो सामाजिक स्वस्थता की दिशा में प्रस्थान हो सकता है।'

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने जनप्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा 'जनप्रतिनिधि होना दायित्व ओढ़ना है। भारत लोकतांत्रिक प्रणाली वाला देश है। जनता के द्वारा जनता पर जनता के लिए शासन किया जाता है। चुनाव के समय उम्मीदवार याचक और जनता दाता होती है। लेकिन चुनाव जीतने के बाद भूमिका बदल जाती है। उम्मीदवार दाता और जनता याचक हो जाती है। लोकतंत्र में चुनाव गंगा-स्नान माना जाता है। इसलिए चुनाव निष्पक्ष और शुचितापूर्ण होने चाहिए। मतदाता भय व प्रलोभन से मुक्त रहे। प्रतिनिधियों का काम है जनता की सेवा। उनमें नैतिकता और कर्तव्यनिष्ठा की भावना होनी चाहिए।' राजसमन्द जिले को नशामुक्त बनाने का आह्वान करते हुए आचार्यवर ने कहा 'जिले के सभी प्रतिनिधि इसे नशामुक्त जिला बनाने का प्रयास करें तो इस जिले की विशिष्ट पहचान बन सकती है।'

द्वितीय सत्र में जिलाप्रमुख श्री किशनलाल गमेती, उपप्रमुख श्री मदनलाल गुर्जर, खमनोर पंचायत प्रधान श्री पुरुषोत्तम माली, आमेट पंचायत के उपप्रधानश्री सूरतसिंह, भीम पंचायत प्रधान श्रीमती दीपिकादेवी, राजसमंद पंचायत के उपप्रधान श्री सुरेश जोशी, देवगढ़ के श्री हमीरसिंह रावत, रेलमगरा की प्रधान श्रीमती रेखा अहीर, नाथद्वारा नगरपालिका की चेयरपर्सन रेखा शर्मा, श्री देवकीनंदन गुर्जर तथा कई सरपंचों ने इस तरह के सम्मेलन को बहुत उपयोगी और सार्थक बताया। मुनि उदितकुमारजी एवं मुनि जयंतकुमारजी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

पूज्य आचार्यवर ने अपने उद्बोधन में कहा 'कार्यकर्ताओं के श्रम का परिणाम है कि यहां इतने प्रतिनिधि उपस्थित हैं। राजसमन्द जिले को स्वस्थ और नशामुक्त जिला बनाने के लिए सलक्ष्य प्रयास किया जाए।' पूज्यप्रवर की प्रेरणा से अनेक प्रधानों, सरपंचों और पंचायत समिति के सदस्यों ने नशामुक्ति का फार्म भरकर संकल्प स्वीकार किया। सम्मेलन का संचालन प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री किशन डागलिया ने किया। पंचायत प्रधान व अन्य विशिष्ट लोगों को साहित्य व स्मृतिचिह्न से सम्मानित किया गया।

दो चरण, तीन गांव, चार घंटे में पावन बने १५० से अधिक घर

१६ अप्रेल। आज परमाराध्य आचार्यवर ने अपने दो चरण के स्पर्श से तीन गांवों में १५० से अधिक घरों को पावन किया। कोशीवाड़ा के तेरापंथ भवन से छह किमी. दूर झालों की मदार में प्रवास स्थल तक पहुंचने में आचार्यवर को लगभग चार घंटे लगे। इसका कारण बनी जनता की श्रद्धासिक्त बलवती भावना। न केवल तेरापंथ समाज के, अपितु अन्य जैन समाज सहित विभिन्न वर्गों के लोग आचार्यवर को आग्रहपूर्वक अपने आवास को पावन करने की प्रार्थना कर रहे थे। अनुकंपा भाव से ओतप्रोत आचार्यवर ने प्रत्येक प्रार्थी पर कृपावृष्टि की। आचार्यवर ने कोशीवाड़ा में ६० से अधिक तथा गांव गुड़ा और झालों की मदार में ६० से अधिक घरों को स्पर्श किया।

पूज्यवर के स्वागत में आज झालों की मदार में श्रद्धा का ज्वार-सा उमड़ रहा था। बीस तेरापंथी परिवारों के अतिरिक्त लगभग पचास मूर्तिपूजक प्रवासी परिवारों ने भी आचार्यवर के इस एक दिवसीय प्रवास में अपने घर खोले। उनकी प्रफुल्लित मुखाकृतियां उनके आन्तरिक उल्लास को अभिव्यक्ति दे रही थीं। आचार्यवर का प्रवास मूर्तिपूजक श्री बसंतीलालजी पामेचा के आवास पर हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रेरक वक्तव्य हुए।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'वीतराग बनने से पूर्व अहं की वृत्ति सभी प्राणियों में होती है। अहंकार से महानता न्यूनता को प्राप्त होती है। अहंकार जितना कमजोर होता है, गुणवत्ता उतनी ही बलवती बनती है। हम अहं विलय के लिए मृदुता का अभ्यास करें।'

मेवाड़ के इस पहाड़ी भू-भाग के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा 'शिशोदा, कोशीवाड़ा, झालों की मदार आदि गांव पहाड़ी इलाके में बसे हुए हैं। मेवाड़ के दर्शन इन्हीं गांवों में हो रहे हैं। ऊंची-नीची भूमि, कहीं पत्थरों के बीच से बहता पानी। प्राकृतिक सौन्दर्य से अभिमंडित इन गांवों में मानों मेवाड़ की आत्मा बोल रही है। प्रातःकाल विहार के समय वातावरण मनोरम होता है। मेवाड़ को देखना और समझना है तो इन पहाड़ों पर चढ़ना और घाटियों में उतरना ही होगा। आज तो सड़के बनने से सुविधा हो गई। हमारे पूर्वज स्वामीजी, मघवागणी, कालूगणी तो पगडंडियों से यहां पधारे। हममें भी अपेक्षानुसार पगडंडियों से चलने और घाटियों में चढ़ने-उतरने का अभ्यास रहना चाहिए।'

चढ़े समीचा शिखर पर

२० अप्रेल। पूज्यवर ने प्रातः समीचा के लिए प्रस्थान किया। मध्यवर्ती समीचा घाटी का दृश्य मनोरम था। प्राकृतिक सुषमायुक्त इन दुर्गम घाटियों और पहाड़ों के बीच बनी गुफाओं ने महाराणा प्रताप को मुगलों से गुरिल्ला

युद्ध करने में भरपूर सहयोग दिया था। पर्वतों के बीच बनी पक्की सड़क का दूसरा छोर तो दिखाई दे रहा था, किन्तु मध्य का भाग ऊंचे-ऊंचे पर्वतों की गोद में छिपा हुआ था। पहाड़ों पर पत्तों से आच्छादित झोंपड़ीनुमा मकानों में रहने वाले भील, गमेती जैसे आदिवासी लोग कुतूहल से अहिंसा यात्रा को निहार रहे थे। आचार्यवर उस दुर्गम मार्ग से यात्रायित थे, जहां १४० किमी. प्रतिघंटा की रफ्तार से भागने वाले वाहन भी चढ़ाई में रेंगते से प्रतीत हो रहे थे और जहां पैदल चलनेवाले राहगीर उतार में ब्रेक की अपेक्षा महसूस कर रहे थे। पहाड़ों के बीच कल-कल बहनेवाला निर्झर और सीताफल, आम, बोर, महुआ, नीम, आइता, गोबल, कुणज, बांस, खन्नी, आक, रतनजोत, सिमलू, खाखरा, सरेस, पीपल, बड़ला, इमली आदि के वृक्ष राहगीरों के लिए नयनाभिराम दृश्य उपस्थित कर रहे थे। इन वृक्षों पर मीठी तान भर रहीं कोयलें यात्रियों में नव उत्साह संप्रेषित कर रही थीं। सड़क के दोनों ओर की गहरी खाइयां जागरूक रहने का स्पष्ट निर्देश दे रही थीं। घाटी की सबसे लंबी चढ़ाई चढ़ने के बाद पूज्यवर ने सड़क पर विराजकर कुछ क्षण विश्राम किया। पहले से प्रतीक्षारत साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों ने पूज्यवर की अभिवंदना की। साध्वियों ने आचार्यवर के पदाभिषेक के अवसर पर साध्वीप्रमुखाजी द्वारा रचित गीत का संगान किया। उस गीत की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं

संघ हिमालय के शिखरों पर चढ़ो सभी हम साथहैं,
धर्म सारथे! थामो बल्गा, सबल तुम्हारे हाथ है,
जय-जय ज्योति चरण, जय-जय महाश्रमण ॥

इतिहास दोहराया

लगभग अड़तालीस वर्ष पूर्व सन १९६२ में गुरुदेवश्री तुलसी ने इसी घाटी को पार करने के बाद दो दोहों की रचना की थी। दोहे इस प्रकार हैं

सीन समीचा रो अति सखरो, मगरा री भरमार।
खालां बिच-बिच खेत ईख रा सीताफल सुखकार ॥
दर्रा बड़ा डरावना, पग चूक्यां पाताल।
रोड़ बापरी रड़भड़े, चलज्यो धीमी चाल ॥

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने गुरु का अनुसरण करते हुए पद्य रचना कर इतिहास की पुनरावृत्ति कर दी। सड़क पर विराजमान आचार्यवर ने अग्रांकित पद्य फरमाया

चढ़े समीचा शिखर पर, संत मंडली साथ।
उपर बैठे रोड पर, साधु-साध्वियां साथ।
चढ़ें साधना के शिखर, मंजिल आए हाथ ॥

आचार्यवर के मुखारबिन्द से इस पद्य को सुनकर सबने न केवल आह्लाद का अनुभव किया, अपितु साधना के द्वारा मंजिल को प्राप्त करने की प्रेरणा भी पाई। इस घाटी को पार करने के साथ ही समीचा और उसकी पार्श्ववर्ती भागलों के भील, गमेती आदि जातियों के सैकड़ों लोग पूज्यवर के स्वागत हेतु उमड़ पड़े और अपने पारंपरिक वाद्यों की सधी हुई धुन के साथ आचार्यवर का स्वागत किया। आचार्यवर का प्रवास शांति भवन में हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व मुख्य नियोजिकाजी एवं महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी के प्रेरक वक्तव्य हुए।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'समीचा हमारे लिए नया क्षेत्र है। इसका नाम तो हम सुनते रहे हैं, किन्तु आना प्रथम बार हुआ है। ऐसी जानकारी मिली कि पूर्ववर्ती दस आचार्यों में केवल नवम अधिशास्ता परम पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी ही यहां पधारे थे और उसके अड़तालीस वर्ष बाद हमारा यहां आना हुआ है। मुझे सात्विक संतोष है कि जहां आचार्यों का कम आना होता है, वहां मैं अपनी प्रथम यात्रा में ही आ गया। घाटी को पार कर हम यहां आए हैं। हम चाहते हैं लंबे समय तक ऐसे घाटों को पैरों से चलकर बेधड़क पार कर सकें।' आचार्यवर ने इस अवसर पर जीवन में आने वाले आरोहों-अवरोहों में मनोबल और शान्तभाव रखते हुए संतुलित रहने की प्रेरणा प्रदान की।

इस अवसर पर राजस्थान के पूर्व सिंचाई मंत्री श्री सुरेन्द्र राठौड़ ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। सभा के अध्यक्ष श्री सुखलाल सिंयाल ने अणुव्रत के संकल्पपत्र पूज्य चरणों में उपहृत किए। स्थानीय पचास श्रावक-श्राविकाओं ने अमृत महोत्सव के अवसर पर एक वर्ष तक प्रतिदिन एक सामायिक करने का संकल्प स्वीकार किया। अनेक दंपतियों ने शीलव्रत स्वीकार किया। पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्त बनने का संकल्प लिया।